एक अति सुंदर कथा है। ऐसी कथा सिर्फ लिखने या पढ़ने मात्र के लिए नहीं होती। जो समझ जाये उनके लिए जीवन में परिवर्तन होने की चाबी है। लिखने वाले और पढ़ने वाले दोनों ही धन्य हो जाये इतनी मीठी रसधार यह कथा के माध्यम से बहती है। ये कथा किसी के जीवन के क्रांति का बीज बन सकता है। बुद्धकालीन यह कथा इस तरह की है।

एक सुंदर सुबह सुदास नाम का एक निम्नवर्ग का गरीब व्यक्ति घर के पीछे तालाब के किनारे जाकर देखता है तो आश्चर्य हो जाता है। तालाब में एक सुंदर कमल का फूल खिला हुआ है। वर्षों से जब से वह यहां रहता है तब से कमल के फूल खिलने की खास मौसम होती है। जैसे मोगरा हर मौसम में नहीं खिलता, ऐसे ही कमल का फूल भी एक खास मौसम में ही खिलता है, इसलिए उन्हें आश्चर्य हुआ की तलाब में बे-मौसम के फूल खिले हुये देखकर। कमल का फूल उसने तोड़ लिया। मन में उसे विचार आया कि यह फूल मैं किसको दूं? बे-मौसमी फूल की कदर कौन करे और उनकी जो मैं चाहूं उतनी कीमत दे सके? तुरंत उसे ख्याल आया कि यह फूल तो मैं राजा को ही दूंगा। मन में वह अवश्य खुश हुआ कि सम्राट उन्हें ऐसा कुछ देगा जिससे उनकी दरिद्रता दूर हो जायेगी।

संत वह जिसके अंतर हृदय से शुभ आशीष बहती रहे

-ब्र.कु.गंगाधर

स्वयं और परमात्मा को पाने के बिना जीवन जीना और मर जाना यह तो बेमौत मरने के बराबर।

फूल लेकर सूबह वह राजमहल की ओर जा रहा है, उतने में उसे एक रथ आते दिखाई दे रहा है। रथ वजीर का था। गरीब व्यक्ति के हाथ में कमल का खिला हुआ फूल देख आश्चर्य हुआ। उसने रथ को खड़ा किया और गरीब व्यक्ति को कहा कि यह फूल तू मुझे देगा? बताओ कितने पैसे लेगा?.. वह जानता था कि मौसम होती है तो इस कमल के फूल की कीमत कोई खास नहीं होती। लेकिन यह तो बे-मौसम के कमल के फूल हैं। और अति सुंदर है। इसलिए साहस कर उसने कह दिया कि सौ रुपए दे दीजिए। वजीर ने कहा 'सौ नहीं हजार दूंगा' लेकिन यह फूल तू मुझे दे दें।

अचानक इतनी कीमत मिलती देख गरीब व्यक्ति विचार में पड़ गया। उसने सोचा कि यह तो वजीर है। जब वजीर इतना पैसा देने के लिए तैयार हो जाता है तब भला सम्राट अवश्य उनसे ज्यादा ही देंगे। इसलिए वह सस्ते में सौदा करने के लिए वह तैयार नहीं हुआ। उसने कहा कि मुझे फूल बेचना नहीं है। वजीर ने सोचा कि यह गरीब व्यक्ति को पैसे कम पड़ रहा है इसलिए वजीर ने कहा कि दस हजार दूंगा, लेकिन यह फूल तू मुझे कोई भी कीमत में दे दे। गरीब व्यक्ति ने कहा कि मुझे कोई भी कीमत में फूल नहीं देना है। और वह राजमहल के रास्ते आगे बढ़ने लगा। थोड़ी दूर ही गया कि उसने एक चक चाहट स्वर्ण रथ उसको मिला। रथ राजा सम्राट का था। राजा को भी इस गरीब के हाथ में बे-मौसमी कमल के फूल को देखकर आश्चर्य हुआ। रथ को खड़ा कर दिया। गरीब व्यक्ति को पास में बुलाकर कहा कि यह कमल का फूल मुझे दे दो। तू जो कीमत मांगेगा उससे दस गुना कीमत दूंगा। लेकिन कमल का फूल तू मुझे दे दे।

गरीब व्यक्ति को आश्चर्य हुआ। एक फूल की इतनी सारी भारी कीमत? मैं मांगू उससे दस गुना धन मुझे मिलेगा। दस हजार मांगू तो लाख और दस लाख मांगू तो करोड़। जिंदगी भर का काल कंटक खत्म हो जायेगा। उतने में उनको एक ऐसा विचार आया कि सुबह की प्रभात में यह सब कहां जा रहे हैं? और क्यों दस गुना कीमत देकर फूल खरीद लेने को तैयार हैं? इसलिए उसने सम्राट को कहा कि महाराज माफ करिये। मैं तो एक गरीब आदमी हूँ। मेरी जिंदगी की दरिद्रता दूर हो जाये इतना धन देने को आप तैयार हैं। थोड़ी देर पहले वजीर का रथ भी इसी रास्ते से गया। उसने मुझे रथ खड़ा कर पूछा तब मुझे और कोई ख्याल नहीं था कि ज्यादा से ज्यादा फूल की कीमत कितनी हो सकती है? इसलिए मैंने मुश्किल से सौ रुपये मांगा उसने एक हजार देने को कहा और मैं कमल का फूल देने को तैयार नहीं हुआ क्योंकि मेरे मन में आपका विचार आया। जबकि वजीर इतना पैसा दे सकता है तो सम्राट इससे ज्यादा ही देगा। इसलिए मैंने उसे मना कर दिया। उसने दस हजार से भी ज्यादा कीमत देने की तैयारी बताई। आप (राजा) भी मैं मांगू उससे दस गुना ज्यादा मूल्य देने को तैयारी बताई! आप यह फूल का क्या

शेष भाग पृष्ठ 4 पर

हमारे सर्व सम्बन्ध भगवान से हों

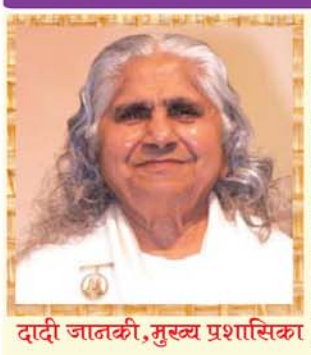

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

ओम शांति। ऋषि-मुनियों को लिए सुनते थे वो त्रिकालदर्शी थे। आज हम बाबा के बच्चे विचार करते हैं इस समय हम त्रिकालदर्शी हैं तो स्थिति कितनी ऊंची है। तीसरा नेत्र खुला है तो त्रिकालदर्शी हैं। तीसरा नेत्र त्रिकालदर्शी बनाता है। त्रिकालदर्शी बनने से बहुत हल्के होते हैं। तभी तीनों लोकों की सैर करते हैं। ऐसा फील होता है जैसे यहीं कहीं एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे हैं। नेचुरल हो गया है। ऐसे ही तीनों लोकों में आना जाना नेचुरल हो गया है। यहां संगम पर खुशी मना रहे हैं। ब्राह्मण जीवन है, सफल कर रहे हैं। सफल करेंगे तो सफलता मिलेगी। सफल करने के लिए दिल खुली रखेंगे, मन भी खुला रखेंगे तो सफलता मिलेगी। कर्म भी ऐसा हो जो दूसरे को प्रेरणा मिले। इसमें हमारी एक्यूरेसी हो। संकल्प एक्यूरेट होता है तो लक्की हैं। यदि संकल्प श्रेष्ठ नहीं होंगे तो आप समान नहीं बना सकते। आप समान बनाने की सेवा ऑर्डनरी सेवा नहीं है। मैसेज देना भी बड़ी सेवा है। परन्तु उससे भी बड़ी आप समान बनाने की सेवा है। आप समान माना अपने समान नहीं, क्योंकि हमारे में भी जो कमी होगी वह भी आ जायेगी। कमी जल्दी आ जायेगी, अच्छाई बाद में आयेगी। बाबा समान बनाना माना बाबा के नजदीक आना। उसकी बुद्धि अच्छा काम करेगी। बाबा का अच्छा सर्विसएबुल बनेंगे। सर्वशक्तिमान से जुटे रहेंगे तो शक्ति आ जायेगी। अंदर ध्यान रखना है कि हमारे सर्व सम्बन्ध भगवान से हों। और कहीं सम्बन्ध नहीं चला जाये।

बाबा से सर्व सम्बन्ध हैं तो यह शक्ति सर्व कमजोरियों को खत्म कर देती है। बाबा सर्वशक्तिमान है, ज्ञान का सागर है, प्रेम, आनंद, शांति का सागर है लेकिन वह गुण मेरे में कैसे आयें, साथी में कैसे आयें? जब सर्व सम्बन्ध एक बाप से होंगे तभी वह गुण आयेंगे।

तो सूक्ष्म में हमारी भावना आप समान बनाने की क्या है? थोड़ा सेवा में मदद करें, क्लास करा ले, लिखाई छपाई कर लें, वह तो जिसमें जो गुण कला होगी वह करेगा। कर्मयोगी बनना है तो कर्म तो करना ही है। शरीर निर्वाह अर्थ भी करना है। लेकिन शरीर में जो आत्मा है उसकी संभाल भी करनी है। कर्मेन्द्रियों के द्वारा मेरी क्या सेवा है। कर्मेन्द्रियों के द्वारा आत्मा पतित से पावन बनती है। पतित भी बनी है तो कर्मेन्द्रियों के द्वारा बनी है। ऐसे पावन नहीं बनेगी। कर्मेन्द्रियों सहित जब इतने जन्म लिए हैं तो कर्मेन्द्रियों द्वारा जो कर्म किए हैं वो कर्म भी पावन बनाना पड़ेगा। सम्बन्ध में भी हमारा कर्म बहुत अच्छा हो। खुद के साथ, औरों के साथ भी। अलौकिकता में लौकिकता न आ जाये - यह खबरदारी हमेशा रहे। लौकिकता में अलौकिकता हो। अगर इस तरह से कर्मों की गुह्य गति को समझकर निमित्त कर्म के सम्बन्ध में आकर भी खबरदार सावधान नहीं रहेंगे तो बाबा की याद इतनी नहीं रहेगी।

याद भूलती क्यों है? आत्मा परमात्मा का ज्ञान भी मिला लेकिन भूलते क्यों हैं? कारण है नीति मर्यादा। पुरुषोत्तम बनने में मदद करते हैं - गुण और बाबा से पाई हुई शक्ति। फिर उसमें लगता है कि ये बाबा की सिखाई हुई, मिली हुई श्रीमत है। इसमें चलने में मजा आता है, सेफ्टी है। हर कर्म में बाबा की शिक्षाएं याद हैं। अच्छा स्टूडेंट जो होता है उसको जो शिक्षायें टीचर से मिली हुई होती हैं, वह काम में आती हैं। शिक्षायें याद करनी पड़ती हैं या काम में आती हैं?

रात में सोते हो तो बीच में जागना भी अच्छा है। बीच में बाबा की याद आती है। जैसे 8 घंटा कर्म करो और बीच-बीच में बाबा को याद करो। कितना भी बिजी रहो लेकिन दिखाई न पड़े। बाबा ने साकार में रहकर अव्यक्त होना सिखाया है। ऐसे इस साल में हम यह अंदर से गहरी लगन रखें। कोई हमको कहे कि आप बिजी हो यह हमको अच्छा नहीं लगता। कोई यह भी न कहे कि सुस्त है। बाबा हमको भाग्य बनाने का चांस दे रहा है। न कभी बिजी दिखाई पड़ें, न कभी लेजी दिखाई पड़ें। सुस्ती छठा विकार सबसे बड़ा विकार है। सुस्ती बहाना बनाने में बड़ी होशियार है। सुस्ती बहाना बनाना सिखाती है, झूठ सिखाती है। बीती को चेतो नहीं, आगे बढ़ जाओ।

जहां नॉलेज की लाइट और माइट है वहां भय हो नहीं सकता

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हमें त्रिकालदर्शी बनाया है इसलिए किसी भी दृश्य को देखते हमें भय नहीं हो सकता। वर्तमान में कोई रो रहा है, कोई चिल्ला रहा है, कोई मर रहा है, कोई भूख में तड़फ रहा है या अर्थ क्वेक हो रही है या कुछ भी हो रहा है, लेकिन हम सिर्फ उस वर्तमान नजारे को नहीं देखते हैं। हम इस वर्तमान में भविष्य क्या छिपा हुआ है उसे जानते हैं। हमें तीनों ही कालों की नॉलेज है। नॉलेज को कहते ही हैं - नॉलेज इज लाइट, नॉलेज इज माइट, तो नॉलेज की लाइट होने के कारण हम तीनों कालों को देखते हैं, सोचते हैं और फिर माइट होने के कारण हमको कोई दु:ख की फीलिंग नहीं आती। क्योंकि जहां नॉलेज की लाइट और माइट है वहां भय हो नहीं सकता। दु:ख वा कमजोरी आ नहीं सकती। नहीं तो कभी भी ऐसा कोई दृश्य देखते हैं तो या तो घबरा जाते हैं या भय में कुछ अपना होश नहीं रहता, अनकांसेस हो जाते हैं, योग-ज्ञान सब भूल जाते हैं, लेकिन हमें ज्ञान-योग भूल नहीं सकता क्योंकि हमने ही तो कहा है कि हमारा राज्य आने वाला है और हम बापदादा के साथ पुरानी सृष्टि के विनाश और नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त हैं। जब नया मकान हमको बनाना है तो पुराने का जरूर विनाश करना होगा। पुराने के बीच में नया तो नहीं बनायेंगे ना। तो हम लोगों ने संगम पर चैलेंज की है कि पुरानी सृष्टि जाने वाली है, नई सृष्टि आने वाली है। कलियुग जा रहा है, सतयुग आ रहा है। रात जायेगी तब तो दिन आयेगा ना। तो हम लोगों को यह पता है कि यह विनाश तो होना ही है, 'नथिंग न्यु'। हमको भयभीत होने की कोई बात नहीं। यह कल्याणकारी विनाश है।

विनाश देखने के लिए त्रिकालदर्शी स्थिति के तख्त पर बैठना है। अगर त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो भयभीत होंगे, घबरायेंगे। दूसरी बात - यह विनाश कोई साधारण विनाश नहीं है, यह विनाश बहुत कल्याणकारी है। अब कहेंगे नाम विनाश है, सबकी मृत्यु होगी फिर कल्याणकारी कैसे हो सकता है? मृत्यु तो खराब चीज होती है! लेकिन यह विनाश क्यों कल्याणकारी है? क्योंकि मैजारिटी आत्मायें चाहती हैं कि हम इस चक्कर से छूटें, हमको तो मोक्ष चाहिए। तो इस विनाश के बाद हमें तो जीवनमुक्ति मिलेगी लेकिन दूसरी आत्मायें परमधाम में जाकर रेस्ट करेंगी, दूसरी आत्माओं की जो शुभ इच्छा है, इस चक्र से निकलना चाहते हैं, रेस्ट में रहना चाहते हैं, वह तो इस विनाश के बाद ही पूरी होगी। हम लोगों के लिए कल्याणकारी इसलिए है कि हमको जीवनमुक्ति का वर्सा मिल जायेगा। स्वर्ग के फाटक यही विनाश खोलेगा। विनाश दरवाजा है। जब विनाश होगा, पुरानी दुनिया खत्म होगी, सभी आत्माओं की जनसंख्या कम जो जायेगी, परमधाम में जाकर बैठेंगी, तब हम राज्य करेंगे। तो विनाश में दो कल्याण हैं - हमारे लिए स्वर्ग के गेट खुलेंगे, दूसरों को मुक्ति मिलेगी। इसीलिए यह नॉलेज होने के कारण ही हम घबराते वा भयभीत नहीं होते हैं।

हम लोग योग करते हैं तो मंसा से केवल व्यक्तियों के परिवर्तन का लक्ष्य नहीं रखते। लेकिन प्रकृति के पांच तत्वों के परिवर्तन का लक्ष्य भी होता है। हम योग से तत्वों को भी चेंज कर रहे हैं, सतोगुणी बना रहे हैं क्योंकि जब तमोगुण खत्म होगा तब सतोगुण स्वत: ही आयेगा। लेकिन तमोगुणी आत्माओं की जो इतनी संख्या है, वह सब सतोगुणी बनकर सतयुग में तो नहीं आयेंगी। इसलिए इन आत्माओं को मुक्तिधाम जाना है। यह नॉलेज स्मृति में रखने से ही त्रिकालदर्शी स्थिति की अवस्था बहुत अच्छी रहेगी। तो इस प्वॉइंट को पक्का करो, तैयारी करो। कोई भी चीज देखो तो अब से ही त्रिकालदर्शी होकर देखो। चाहे अच्छी हो या बुरी लेकिन उसको भी त्रिकालदर्शी होकर देखो। त्रिकालदर्शी स्थिति ऐसी शक्तिशाली स्थिति है, उसमें कभी हलचल नहीं होगी - यह क्यों हो रहा है, यह कैसे हो रहा है, ऐसे नहीं होना चाहिए, ऐसे होना चाहिए। तो 'कैसे' और 'ऐसे' नहीं होगा।